महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

कक्षा- एम.ए./एम.फिल./पीएच्.डी.

विषय- काव्यप्रकाश

उपविषय- काव्य-हेतु

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

काव्य-हेतु

- सारग्राही आचार्य मम्मट ने इस विषय में भी अपनी समन्वयात्मक दृष्टि का ही परिचय दिया है। मम्मट के समक्ष अपने से पूर्ववर्ती आचार्यों की विचार सामग्री थी, उन्होंने सभी का समन्वय करते हुए शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास को काव्यरचना का हेतु स्वीकार किया है-

  शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
  काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

  (का०प्र० 1/3)

- अर्थात् काव्य सृजन की शक्ति, लोककाव्य तथा शास्त्रादि के निरीक्षण एवं अनुशीलनजन्य निपुणता और काव्यज्ञ आचार्यों की शिक्षा को प्राप्त कर अभ्यास करना ये तीन काव्य के हेतु हैं।

शक्ति

- आचार्य मम्मट काव्य शक्ति को प्रथम निरूपित कर अपेक्षाकृत अधिक महत्व प्रदान करते हैं, उनकी दृष्टि में शक्ति कवित्व का बीजरूप संस्कार विशेष है, जिसके बिना काव्यरचना सम्भव नहीं है, यदि काव्यरचना शक्ति के अभाव में होती है तो वह उपहासास्पद भी होती है।

शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः, यां विना काव्यं न प्रसरेत् प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्।

(का०प्र० 1/3)

निपुणता

- शास्त्र अर्थात् छन्द, व्याकरण, कोश, कला, पुरुषार्थचतुष्टय, हाथी, घोड़े, असि आदि के स्वरूप प्रतिपादक ग्रन्थों और महाकवियों के काव्यों तथा समासादि के अनुशीलन से प्राप्त निपुणता व्युत्पत्ति होती है—

लोकस्य स्थावर जङ्गमात्मकस्यलोकवृत्तस्य, शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभिधानकोशकलाचतुर्वर्ग-गजतुरगखड्गादिलक्षणग्रन्थानां, काव्यानां च महाकविसम्बन्धिनाम्, आदिग्रहणादितिहासादीनां च विमर्शनाद् व्युत्पत्तिः।

(का० प्र० 1/3, वृत्ति

अभ्यास

- जो काव्य का सृजन तथा विवेचन कर सकते हैं, उनके उपदेश के अनुसार काव्य-निर्माण और शब्द-योजना में बार-बार प्रयत्न ही अभ्यास है।

  काव्यं कर्तुं विचारयितुं च ये जानन्ति तदुपदेशेन करणे योजने च पौनःपुन्येन प्रवृत्तिरिति।

ये तीनों शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास काव्य-रचना के समन्वित कारण हैं। इन तीनों के होने पर ही अपूर्व काव्य-सृजन होता है।

- आचार्य मम्मट के निर्दिष्ट हेतु निरूपण के विहंगावलोकन के पश्चात् हम कह सकते हैं कि मम्मट ने पूर्ववर्ती सभी आचायों द्वारा प्रतिपादित विचारों को आत्मसात् कर स्पष्ट रूप से तीन काव्य हेतुओं को स्वीकार किया और मम्मट की कारिका पर रुद्रट का विशेष प्रभाव है क्योंकि वे इन तीनों तत्त्वों के महत्त्व को स्वीकार कर चुके थे—

त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिव्युत्पत्तिरभ्यासः।

- आचार्य मम्मट के अनुसार उत्कृष्ट काव्य के निर्माण के लिए शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास का योग अपेक्षित है। जहाँ राजशेखर प्रतिभा एवं शक्ति को भिन्न तत्त्व स्वीकार करते हैं, वहीं दूसरी ओर ध्वनिवादी आनन्दवर्धन एवं अभिनवगुप्त दोनों का ही ऐक्य प्रतिपादित करते है। इसका प्रभाव मम्मट पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
- मम्मट ने काव्यप्रकाश में शक्ति शब्द का प्रयोग किया है तथा प्रतिभा को उन्होंने उसका पर्यायवाचक शब्द ही स्वीकार किया है (ऐसा प्रतीत होता है)।
- इसी प्रकार मम्मट शक्ति, निपुणता एवं अभ्यास के क्रम निरूपण द्वारा शक्ति का महत्त्व स्वीकार करते हुए भी निपुणता एवं अभ्यास को पृथक न मानकर उसी का उपकारक तत्त्व स्वीकार करते हैं।

- राजशेखर जिस अभ्यास को महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वह न तो काव्य का मुख्य हेतु है और न आवश्यक हेतु। अभ्यास से केवल कवि को प्रतिभा तथा तत्प्रणीत काव्य में सौन्दर्य तथा परिष्कार आता है। इसीलिए मम्मट ने कारिका में 'हेतु' शब्द का प्रयोग किया है, हेतवः का नहीं।

"त्रयः समुदिता न तु व्यस्तास्तस्य काव्यस्योभवे निर्माण समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः।"

(का०प्र० 1/3, वृत्ति)

- प्रतिभा एक सहज स्वाभाविक नैसगिक तत्त्व है जो कि नवीन-नवीन उद्भावना करने में समर्थ है। प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति का काव्य हार्दिक अनुभूति का अभिव्यञ्जक होता है। प्रायः सभी आचार्यों ने प्रतिभा के महत्त्व को स्वीकार किया है।
- व्युत्पत्ति प्रतिभा से भिन्न तत्त्व है। वह तो चराचर जगत और जीवन के अनुभव, शास्त्र अनुशीलन तथा अन्यान्य ग्रथों के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन से सम्भूत एक तत्त्व है। रुद्रट ने स्पष्ट ही लिखा है—

छन्दोव्याकरणकलालोकस्थितिपदपदार्थविज्ञानात्।
युक्तायुक्तविवेको व्युत्पत्तिरियं समासेन। (रुद्रट 1/18)

- हेमचन्द्र भी लोक, शास्त्र और काव्य में निपुणता को व्युत्पत्ति कहते हैं लोकशास्त्रकाव्येषु निपुणता व्युत्पत्तिः (हेमचन्द्र, पृ०5) किन्तु व्युत्पत्ति के द्वारा प्रतिभा के अभाव की पूर्ति नहीं हो सकती है अन्यथा प्रत्येक विद्वान् कवि और साहित्यकार बन जाता।
- आचार्य मम्मट के 'निपुणता' शब्द की व्युत्पत्ति (व्याख्या) में रुद्रट के प्रभाव का सहज अनुसन्धान किया जा सकता है। व्युत्पत्ति के अभाव में यद्यपि केवल प्रतिभा के द्वारा काव्य की रचना सम्भव है; किन्तु वह उत्कृष्ट काव्य रचना नहीं होगी।

- उपर्युक्त शक्ति एवं निपुणता के अतिरिक्त अभ्यास का योगदान भी काव्य रचना में होता है, वैसे यदि हम व्यापक दृष्टि से विचार करें तो अभ्यास एवं व्युत्पत्ति में विशेष अन्तर नहीं है। अभ्यास का परिपाक ही व्युत्पत्ति है। तथापि इन दोनों में थोड़ा अन्तर यह है कि शास्त्रों के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन से उत्पन्न निपुणता ही व्युत्पत्ति है, किन्तु इन्हीं शास्त्रों के अध्ययन से उत्पन्न ज्ञान के आधार पर कवि द्वारा काव्य-निर्माण में पौनःपुन्येन प्रवृत्ति ही अभ्यास है –

  काव्यं कर्तुं विचारयितुं च ये जानन्ति तदुपदेशेन करणे योजने च पौनः पुन्येन प्रवृत्तिरिति। (का०प्र० 1/3, वृत्ति)

- इस प्रकार हम देखते हैं कि काव्यहेतु निरूपण की परम्परा में आचार्य मम्मट ने विभिन्न मतों में समन्वय स्थापित किया है। एक ओर जहाँ ध्वनिवादी आचार्य, राजशेखर तथा मङ्गल आदि विभिन्न धारणाओं के पोषक थे, वहाँ मम्मट ने अनेकता में एकता की स्थापना कर समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

- परवर्ती काल में काव्यहेतु सम्बन्धी मान्यताओं में पुनः थोड़ा परिवर्तन होता है। मम्मट जहाँ समन्वयवादी थे, शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास के महत्त्व को स्वीकार करते थे, वहीं वाग्भट्ट प्रथम (द्वादश शतक) ने केवल प्रतिभा को काव्य का हेत, व्युत्पत्ति को उसका आभूषण तथा अभ्यास को सामान्यतः एक ग्राह्य तत्त्व अर्थात् आवश्यक स्वीकार नहीं किया है।

(का० अ० 1/3)

- वाग्भट्ट द्वितीय ने हेमचन्द्र के अनुसार प्रतिभा को काव्य का हेतु तथा अन्य दो तत्त्वों को उसका परिष्कारक माना है।

(का० अ०, वाग्भट्ट, पृ० 2)

- इसी विचारधारा का समर्थन जयदेव ने भी किया है, वे कहते हैं कि जिस प्रकार मिट्टी और जल से युक्त बीज लता की उत्पत्ति का हेतु है, उसी प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से युक्त प्रतिभा काव्य का हेतु है।

(चन्द्रालोक 1/6)

- संस्कृत काव्यशास्त्र के अन्तिम आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ प्रतिभा को काव्य का कारण मानते हैं, व्युत्पत्ति और अभ्यास को हेमचन्द्र के समान काव्य का कारण न मानकर वे प्रतिभा का कारण मानते हैं।

- किन्त हमारे विचार से आचार्य मम्मट की विचारधारा से परवर्ती अधिकांश विद्वान् थोड़ा-बहुत प्रभावित हैं। तभी तीनों तत्त्वों के महत्त्व को अपने-अपने दृष्टिकोण से स्वीकार करते हैं, वहाँ दृष्टिकोण का अन्तर ही विशेष है, मूल विचारधारा का नहीं। मम्मट के ये तीनों तत्त्व शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास दण्डचक्रादि न्याय से काव्यनिर्माण तथा उसके उत्कर्ष के हेतु हैं।

- जिस प्रकार घट-निर्माण में दण्ड तथा चक्र परस्पर सहयोगी होते हैं, उसी प्रकार शक्ति आदि भी परस्पर सापेक्ष होकर ही काव्य निर्माण करते हैं। इसीलिए मम्मट ने कारिका में 'हेतु' शब्द का प्रयोग किया है और वृत्ति में स्पष्ट शब्दों में अपनी मान्यता को व्यक्त किया है।

धन्यवादः